Title-code: UPHIN-48963 E-mail: jksingh.hardoi@gmail.com

सत्य का असर
समाचार पत्र

20,11,2023 jksingh.hardoi@gmail.com मोबाइल नंबर 9956834016

कानपुर पत्रकार जितेंद्र सिंह पटेल

सर्दियों में मत्स्य पालक तालाबों की करें विशेष देखभाल - डॉ०शशि कांत

पत्रकार जितेंद्र सिंह पटेल

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर के पशुपालन वैज्ञानिक डॉक्टर शशिकांत ने सर्दियों में मत्स्य पालक तालाबों की करें विशेष देखभाल विषय पर एडवाइजरी जारी की है उन्होंने विश्व मत्स्य दिवस 21 नवंबर से पूर्व मत्स्य पालकों के लिए एडवाइज जारी करते हुए बताया है कि वर्तमान समय सर्दी का है । मछली पालन के लिए यह समय बहुत ही कठोर होता है। इस समय मछलियों की नवंबर, दिसंबर , जनवरी के महीनों में वृद्धि कम हो जाती है साथ ही साथ मछलियां काफी सुस्त हो जाती हैं । तालाबों में ऑक्सीजन की कमी हो जाती है। जिससे मछलियों की मृत्यु दर बढ़ जाती है। इन सभी कारणों को ध्यान में रखते हुए मत्स्य पालकों को तालाबों में ऑक्सीजन की पर्याप्त व्यवस्था करने हेतु एरिएटर का प्रयोग करना चाहिए। यदि एरिएटर संभव न हो सके तब तालाब में प्रत्येक माह एक या दो बार पूरे तालाब के पानी का एक चौथाई पानी बदल कर ताजा पानी भर दें जिससे पानी में ऑक्सीजन स्तर बढ़ जाता है।साथ ही साथ मत्स्य पालकों को ध्यान रखना चाहिए कि सर्दियों में मछलियां को आहार की मात्रा भी कम दें। इन बातों का ध्यान रखते हुए मत्स्य पालक सर्दी में भी अपने तालाब की मछलियों को अच्छी वृद्धि करा सकते हैं और रोगों से भी बचा सकते हैं ।

विश्व मत्स्य दिवस के बारे में बताते हुए डॉ० शशिकांत ने बताया कि मत्स्य पालन क्षेत्र को एक उभरता हुआ क्षेत्र माना जाता है और इसमें समाज के कमजोर वर्ग के आर्थिक सशक्तिकरण समाज और समावेशी विकास लाने की अपार संभावनाएं हैं। भारत वैश्विक मछली उत्पादन में 8 प्रतिशत हिस्सेदारी के साथ विश्व का तीसरा सबसे बड़ा मछली उत्पादक , दूसरा सबसे बड़ा जलीय कृषि उत्पादक , सबसे बड़ा झींगा उत्पादक और चौथा सबसे बड़ा समुद्री खाद्य निर्यातक है । उन्होंने बताया कि भारतीय मत्स्य पालन क्षेत्र लगातार बढ़ रहा है और मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय के मत्स्य पालन विभाग का यह प्रयास रहा है न केवल 22 एमएमटी मछली उत्पादन के पीएमएमएसवाई लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रगति को बनाए रखा जाए , बल्कि वित्तीय वर्ष 2024 - 25 तक एक लाख करोड़ रुपए का निर्यात भी किया जा सके । यह क्षेत्र देश में तीन करोड़ मछुआरों और मछली पालकों को रूप से आय एवं आजीविका प्रदान करने मे मुख्य भूमिका निभा रहा है ।

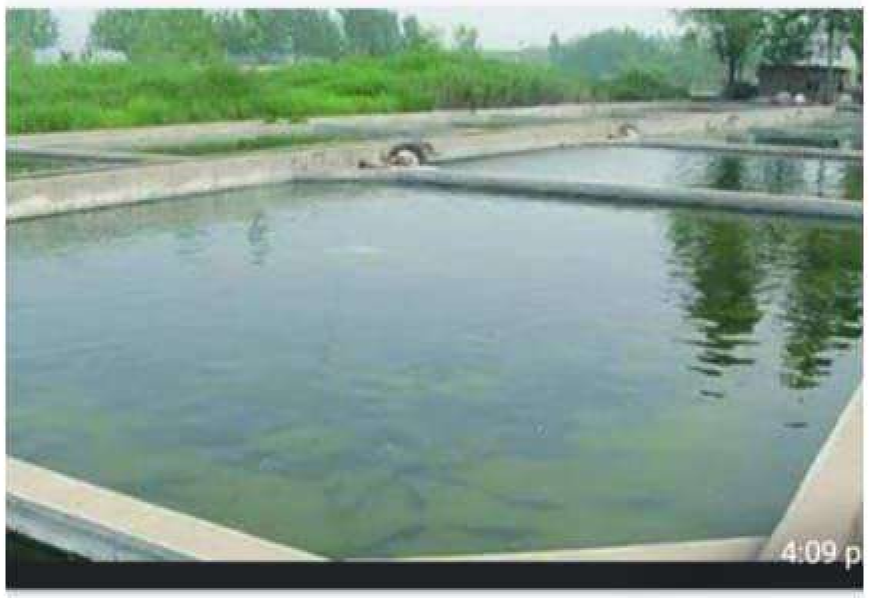

हिंदी दैनिक

रहस्य संदेश

20 लखनऊ एवं एटा से प्रकाशित, सोमवार 20 नवंबर 2023 RNI-No. UPHIN/2007/20715 पेज

सर्दियों में मत्स्य पालक तालाबों की करें विशेष देखभाल : डॉ०शशि कांत

रहस्य संदेश
(अनवर अशरफ)

कानपुर : चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर के पशुपालन वैज्ञानिक डॉक्टर शशिकांत ने सर्दियों में मत्स्य पालक तालाबों की करें विशेष देखभाल विषय पर एडवाइजरी जारी की है उन्होंने विश्व मत्स्य दिवस 21 नवंबर से पूर्व मत्स्य पालकों के लिए एडवाइज जारी करते हुए बताया है कि वर्तमान समय सर्दी का है । मछली पालन के लिए यह समय बहुत ही कठोर होता है। इस समय मछलियों की नवंबर, दिसंबर , जनवरी के महीनों में वृद्धि कम हो जाती है साथ ही साथ मछलियां काफी सुस्त हो जाती हैं । तालाबों में ऑक्सीजन की कमी हो जाती है। जिससे मछलियों की मृत्यु दर बढ़ जाती है। इन सभी कारणों को ध्यान में रखते हुए मत्स्य पालकों को तालाबों में ऑक्सीजन की

पर्याप्त व्यवस्था करने हेतु एरिएटर का प्रयोग करना चाहिए। यदि एरिएटर संभव न हो सके तब तालाब में प्रत्येक माह एक या दो बार पूरे तालाब के पानी का एक चौथाई पानी बदल कर ताजा पानी भर दें जिससे पानी में ऑक्सीजन स्तर बढ़ जाता है।साथ ही साथ मत्स्य पालकों को ध्यान रखना चाहिए कि सर्दियों में मछलियां को आहार की मात्रा भी कम दें। इन बातों का ध्यान रखते हुए मत्स्य पालक सर्दी में भी अपने तालाब की मछलियों को अच्छी वृद्धि करा सकते हैं और रोगों से भी बचा सकते हैं ।

विश्व मत्स्य दिवस के बारे में बताते हुए डॉ० शशिकांत ने बताया कि मत्स्य पालन क्षेत्र को एक उभरता हुआ क्षेत्र माना जाता है और इसमें समाज के कमजोर वर्ग के आर्थिक सशक्तिकरण समाज और समावेशी विकास लाने की अपार संभावनाएं हैं। भारत वैश्विक मछली उत्पादन में 8 प्रतिशत हिस्सेदारी के साथ विश्व का तीसरा सबसे बड़ा मछली उत्पादक , दूसरा सबसे बड़ा जलीय कृषि उत्पादक , सबसे बड़ा झींगा उत्पादक और चौथा सबसे बड़ा समुद्री खाद्य निर्यातक है । उन्होंने बताया कि भारतीय मत्स्य पालन क्षेत्र लगातार बढ़ रहा है और मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय के मत्स्य पालन विभाग का यह प्रयास रहा है न केवल 22 एमएमटी मछली उत्पादन के पीएमएमएसवाई लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रगति को बनाए रखा जाए , बल्कि वित्तीय वर्ष 2024 - 25 तक एक लाख करोड़ रुपए का निर्यात भी किया जा सके । यह क्षेत्र देश में तीन करोड़ मछुआरों और मछली पालकों को रूप से आय एवं आजीविका प्रदान करने मे मुख्य भूमिका निभा रहा है ।

लखनऊ और देहरादून से प्रकाशित राष्ट्रीय हिंदी दैनिक
जन एक्सप्रेस
लखनऊ | वर्ष: 15 | अंक: 39 | मूल्य: ₹ 3.00/- | पेज : 12 | सोमवार | 20 नवंबर, 2023

मत्स्य पालकों को सर्दी में विशेष देखभाल के लिए जारी की एडवाइजरी

जन एक्सप्रेस । कानपुर नगर

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर के पशुपालन वैज्ञानिक डॉ.शशिकांत ने विश्व मत्स्य दिवस 21 नवंबर से पूर्व मत्स्य पालकों के लिए सर्दियों में मत्स्य पालक तालाबों की करें विशेष देखभाल विषय पर रविवार को एडवाइजरी जारी की। उन्होंने बताया कि नवंबर, दिसंबर, जनवरी के महीनों में मछलियों की वृद्धि कम होने के साथ ही मछलियां काफी सुस्त हो जाती हैं। तालाबों में ऑक्सीजन की कमी होने से मछलियों की मृत्यु दर बढ़ जाती है। उन्होंने मत्स्य पालकों को तालाबों में ऑक्सीजन की पर्याप्त व्यवस्था करने के लिए एरिएटर का प्रयोग करने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि एरिएटर संभव न होने पर प्रत्येक माह एक या दो बार पूरे तालाब के पानी का एक चौथाई पानी बदल कर ताजा पानी भर देना चाहिए

जिससे पानी में ऑक्सीजन स्तर बढ़ जाता है। विश्व मत्स्य दिवस के बारे में बताते हुए डॉ.शशिकांत ने बताया कि मत्स्य पालन क्षेत्र को एक उभरता हुआ क्षेत्र माना जाता है और इसमें समाज के कमजोर वर्ग के आर्थिक सशक्तिकरण समाज और समावेशी विकास लाने की अपार संभावनाएं हैं। भारत वैश्विक मछली उत्पादन में 8 प्रतिशत हिस्सेदारी के साथ विश्व का तीसरा सबसे बड़ा मछली उत्पादक, दूसरा सबसे बड़ा जलीय कृषि उत्पादक, सबसे बड़ा झींगा उत्पादक और चौथा सबसे बड़ा समुद्री खाद्य निर्यातक है।

सर्दियों में मत्स्य पालक तालाबों की करें विशेष देखभाल- डॉ0शशि कांत

दैनिक कानपुर उजाला

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर के पशुपालन वैज्ञानिक डॉक्टर शशिकांत ने सर्दियों में मत्स्य पालक तालाबों की करें विशेष देखभाल विषय पर एडवाइजरी जारी की है उन्होंने विश्व मत्स्य दिवस 21 नवंबर से पूर्व मत्स्य पालकों के लिए एडवाइज जारी करते हुए बताया है कि वर्तमान समय सर्दी का है । मछली पालन के लिए यह समय बहुत ही कठोर होता है। इस समय मछलियों की नवंबर, दिसंबर, जनवरी के महीनों में वृद्धि कम हो जाती है साथ ही साथ मछलियां काफी सुस्त हो जाती हैं । तालाबों में ऑक्सीजन की कमी हो जाती है। जिससे मछलियों की मृत्यु दर बढ़ जाती है। इन सभी कारणों को ध्यान में रखते हुए मत्स्य पालकों को तालाबों में ऑक्सीजन की पर्याप्त व्यवस्था करने हेतु एरिएटर का प्रयोग करना चाहिए। यदि एरिएटर संभव न हो सके तब तालाब में प्रत्येक माह एक या दो बार पूरे तालाब के पानी का एक चौथाई पानी बदल कर ताजा पानी भर दें जिससे पानी में ऑक्सीजन स्तर बढ़ जाता है।साथ ही साथ मत्स्य पालकों को ध्यान रखना चाहिए कि सर्दियों में मछलियां को आहार की मात्रा भी कम दें। इन बातों का ध्यान रखते हुए मत्स्य पालक सर्दी में भी अपने तालाब की मछलियों को अच्छी वृद्धि करा सकते हैं और रोगों से भी बचा सकते हैं। विश्व मत्स्य दिवस के बारे में बताते हुए डॉ0 शशिकांत ने बताया कि मत्स्य पालन क्षेत्र को एक उभरता हुआ क्षेत्र माना जाता है और इसमें समाज के कमजोर वर्ग के आर्थिक सशक्तिकरण समाज और समावेशी विकास लाने की अपार संभावनाएं हैं। भारत वैश्विक मछली उत्पादन में 8 प्रतिशत हिस्सेदारी के साथ विश्व का तीसरा सबसे बड़ा मछली उत्पादक ए दूसरा सबसे बड़ा जलीय कृषि उत्पादक ए सबसे बड़ा झींगा उत्पादक और चौथा सबसे बड़ा समुद्री खाद्य निर्यातक है । उन्होंने बताया कि भारतीय मत्स्य पालन क्षेत्र लगातार बढ़ रहा है और मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय के मत्स्य पालन विभाग का यह प्रयास रहा है न केवल 22 एमएमटी मछली उत्पादन के पीएमएमएसवाई लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रगति को बनाए रखा जाए ए बल्कि वित्तीय वर्ष 2024-25 तक एक लाख करोड़ रुपए का निर्यात भी किया जा सके । यह क्षेत्र देश में तीन करोड़ मछुआरों और मछली पालकों को रूप से आय एवं आजीविका प्रदान करने मे मुख्य भूमिका निभा रहा है।

सर्दियों में मत्स्य पालक तालाबों की करें विशेष देखभालः डॉ. शशिकांत

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर के पशुपालन वैज्ञानिक डॉक्टर शशिकांत ने सर्दियों में मत्स्य पालक तालाबों की करें विशेष देखभाल विषय पर एडवाइजरी जारी की है उन्होंने विश्व मत्स्य दिवस 21 नवंबर से पूर्व मत्स्य पालकों के लिए एडवाइज जारी करते हुए बताया है कि वर्तमान समय सर्दी का है । मछली पालन के लिए यह समय बहुत ही कठोर होता है। इस समय मछलियों की नवंबर, दिसंबर , जनवरी के महीनों में वृद्धि कम हो जाती है साथ ही साथ मछलियां काफी सुस्त हो जाती है । तालाबों में ऑक्सीजन की कमी हो जाती है। जिससे मछलियों की मृत्यु दर बढ़ जाती है। इन सभी कारणों को ध्यान में रखते हुए मत्स्य पालकों को तालाबों में ऑक्सीजन की पर्याप्त व्यवस्था करने हेतु एरिएटर का प्रयोग करना चाहिए। यदि एरिएटर संभव न हो सके तब तालाब में प्रत्येक माह एक या दो बार पूरे तालाब के पानी का एक चौथाई पानी बदल कर ताजा पानी भर दें जिससे पानी में ऑक्सीजन स्तर बढ़ जाता है।साथ ही साथ मत्स्य पालकों को ध्यान रखना चाहिए कि सर्दियों में मछलियां को आहार की मात्रा भी कम दें। इन बातों का ध्यान रखते हुए मत्स्य पालक सर्दी में भी अपने तालाब की मछलियों को अच्छी वृद्धि करा सकते हैं और रोगों से भी बचा सकते हैं ।

विश्व मत्स्य दिवस के बारे में बताते हुए डॉ0 शशिकांत ने बताया कि मत्स्य पालन क्षेत्र को एक उभरता हुआ क्षेत्र माना जाता है और इसमें समाज के कमजोर वर्ग के आर्थिक सशक्तिकरण समाज और समावेशी विकास लाने की अपार संभावनाएं हैं। भारत वैश्विक मछली उत्पादन में 8 प्रतिशत हिस्सेदारी के साथ विश्व का तीसरा सबसे बड़ा मछली उत्पादक , दूसरा सबसे बड़ा जलीय कृषि उत्पादक , सबसे बड़ा झींगा उत्पादक और चौथा सबसे बड़ा समुद्री खाद्य निर्यातक है । उन्होंने बताया कि भारतीय मत्स्य पालन क्षेत्र लगातार बढ़ रहा है और मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय के मत्स्य पालन विभाग का यह प्रयास रहा है न केवल 22 एमएमटी मछली उत्पादन के पीएमएमएसवाई लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रगति को बनाए रखा जाए , बल्कि वित्तीय वर्ष 2024 - 25 तक एक लाख करोड़ रुपए का निर्यात भी किया जा सके । यह क्षेत्र देश में तीन करोड़ मछुआरों और मछली पालकों को रूप से आय एवं आजीविका प्रदान करने मे मुख्य भूमिका निभा रहा है ।

अधिकतम तापमान 32.00° >> न्यूनतम तापमान 17.00° >> सूर्योदय 6:12 >> सूर्यास्त 17:20 >> डॉलर 83.26 >> यूरो 87.6

दैनिक भास्कर

देश का विश्वसनीय अखबार

लखनऊ | वर्ष-08, अंक-45 | सोमवार 20 नवंबर 2023 | कुल पृष्ठ 14 | मूल्य 3.00 रुपये

सर्दियों में मत्स्य पालक तालाबों की करें विशेष देखभालः डॉ. शशिकांत

भास्कर ब्यूरो

कानपुर। सीएसए के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर के पशुपालन वैज्ञानिक डॉक्टर शशिकांत ने सर्दियों में मत्स्य पालक तालाबों की करें विशेष देखभाल विषय पर एडवाइजरी जारी की है उन्होंने विश्व मत्स्य दिवस 21 नवंबर से पूर्व मत्स्य पालकों के लिए एडवाइज जारी करते हुए बताया है कि वर्तमान समय सर्दी का है । मछली पालन के लिए यह समय बहुत ही कठोर होता है। इस समय मछलियों की नवंबर, दिसंबर , जनवरी के महीनों में वृद्धि कम हो जाती है साथ ही साथ मछलियां काफी सुस्त हो जाती हैं । तालाबों में ऑक्सीजन की कमी हो जाती है। जिससे मछलियों की मृत्यु दर बढ़ जाती है। इन सभी कारणों को ध्यान में रखते हुए मत्स्य पालकों को तालाबों में ऑक्सीजन की पर्याप्त व्यवस्था करने हेतु एरिएटर का प्रयोग करना चाहिए। यदि एरिएटर संभव न हो सके तब तालाब में प्रत्येक माह एक या दो बार पूरे तालाब के पानी का एक चौथाई पानी बदल कर ताजा पानी भर दें जिससे पानी में ऑक्सीजन स्तर बढ़ जाता है।साथ ही

साथ मत्स्य पालकों को ध्यान रखना चाहिए कि सर्दियों में मछलियां को आहार की मात्रा भी कम दें। इन बातों का ध्यान रखते हुए मत्स्य पालक सर्दी में भी अपने तालाब की मछलियों को अच्छी वृद्धि करा सकते हैं और रोगों से भी बचा सकते हैं।

विश्व मत्स्य दिवस के बारे में बताते हुए डॉ० शशिकांत ने बताया कि मत्स्य पालन क्षेत्र को एक उभरता हुआ क्षेत्र माना जाता है और इसमें समाज के कमजोर वर्ग के आर्थिक सशक्तिकरण समाज और समावेशी विकास लाने की अपार संभावनाएं हैं। भारत वैश्विक मछली उत्पादन में 8 प्रतिशत हिस्सेदारी के साथ विश्व का तीसरा सबसे बड़ा मछली उत्पादक , दूसरा सबसे बड़ा जलीय कृषि उत्पादक, सबसे बड़ा झींगा उत्पादक और चौथा सबसे बड़ा समुद्री खाद्य निर्यातक है।

Sign in to edit and save changes to this file.

अंक- 252 कानपुर, सोमवार 20 नवम्बर 2023 पृष्ठ-8

दैनिक

आज का कानपुर

सर्दियों में मत्स्य पालक तालाबों की करें विशेष देखभाल - डॉ0 शशि कांत

आज का कानपुर

कानपुर । सीएसए के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर के पशुपालन वैज्ञानिक डॉक्टर शशिकांत ने सर्दियों में मत्स्य पालक तालाबों की करें विशेष देखभाल विषय पर एडवाइजरी जारी की है उन्होंने विश्व मत्स्य दिवस 21 नवंबर से पूर्व मत्स्य पालकों के लिए एडवाइज जारी करते हुए बताया है कि वर्तमान समय सर्दी का है मछली पालन के लिए यह समय बहुत ही कठोर होता है इस समय मछलियों की नवंबर, दिसंबर, जनवरी के महीनों में वृद्धि कम हो जाती है साथ ही साथ मछलियां काफी सुस्त हो जाती हैं तालाबों में ऑक्सीजन की कमी हो जाती है जिससे मछलियों की मृत्यु दर बढ़ जाती है इन सभी कारणों को ध्यान में रखते हुए मत्स्य पालकों को तालाबों में ऑक्सीजन की पर्याप्त व्यवस्था करने हेतु एरिएटर का प्रयोग करना चाहिए यदि एरिएटर संभव न हो सके तब तालाब में प्रत्येक माह एक या दो बार पूरे तालाब के पानी का एक चौथाई पानी बदल कर ताजा पानी भर दें जिससे पानी में ऑक्सीजन स्तर बढ़ जाता है साथ ही साथ मत्स्य पालकों को ध्यान रखना चाहिए कि सर्दियों में मछलियां को आहार की मात्रा भी कम दें इन बातों का ध्यान रखते हुए मत्स्य पालक सर्दी में भी अपने तालाब की मछलियों को अच्छी वृद्धि करा सकते हैं और रोगों से भी बचा सकते हैं

विश्व मत्स्य दिवस के बारे में बताते हुए डॉ0 शशिकांत ने बताया कि मत्स्य पालन क्षेत्र को एक उभरता हुआ क्षेत्र माना जाता है और इसमें समाज के कमजोर वर्ग के आर्थिक सशक्तिकरण समाज और समावेशी विकास लाने की अपार संभावनाएं हैं भारत वैश्विक मछली उत्पादन में 8 प्रतिशत हिस्सेदारी के साथ विश्व का तीसरा सबसे बड़ा मछली उत्पादक, दूसरा सबसे बड़ा जलीय कृषि उत्पादक , सबसे बड़ा झींगा उत्पादक और चौथा सबसे बड़ा समुद्री खाद्य निर्यातक है उन्होंने बताया कि भारतीय मत्स्य पालन क्षेत्र लगातार बढ़ रहा है और मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय के मत्स्य पालन विभाग का यह प्रयास रहा है न केवल 22 एमएमटी मछली उत्पादन के पीएमएमएसवाई लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रगति को बनाए रखा जाए, बल्कि वित्तीय वर्ष 2024 - 25 तक एक लाख करोड़ रुपए का निर्यात भी किया जा सके यह क्षेत्र देश में तीन करोड़ मछुआरों और मछली पालकों को रूप से आय एवं आजीविका प्रदान करने मे मुख्य भूमिका निभा रहा है।

वर्ष-17 अंक-24 पृष्ठ-8 मूल्य-1 रुपए कानपुर, सोमवार 20 नवम्बर 2023

कानपुर से प्रकाशित, लखनऊ, इलाहाबाद, बुंदेलखंड, फतेहपुर, इटावा, कन्नौज, मैनपुरी, ऐटा, हरदोई, उन्नाव, कानपुर देहात, औरैया में प्रसारित

RNI No.- UPHIN/2007/27090

दैनिक नगर छाया

आप की आवाज़.....

सर्दियों में मत्स्य पालक तालाबों की करें विशेष देखभाल: डॉ. शशिकांत

कानपुर (नगर छाया समाचार)। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर के पशुपालन वैज्ञानिक डॉक्टर शशिकांत ने सर्दियों में मत्स्य पालक तालाबों की करें विशेष देखभाल विषय पर एड्वाइजरी जारी की है उन्होंने विश्व मत्स्य दिवस 21 नवंबर से पूर्व मत्स्य पालकों के लिए एडवाइज जारी करते हुए बताया है कि वर्तमान समय सर्दी का है । मछली पालन के लिए यह समय बहुत ही कठोर होता है। इस समय मछलियों की नवंबर, दिसंबर , जनवरी के महीनों में वृद्धि कम हो जाती है साथ ही साथ मछलियां काफी सुस्त हो जाती है । तालाबों में ऑक्सीजन की कमी हो जाती है। जिससे मछलियों की मृत्यु दर बढ़ जाती है। इन सभी कारणों को ध्यान में रखते हुए मत्स्य पालकों को तालाबों में ऑक्सीजन की पर्याप्त व्यवस्था करने हेतु एरिएटर का प्रयोग करना चाहिए। यदि एरिएटर संभव न हो सके तब तालाब में प्रत्येक माह एक या दो बार पूरे तालाब के पानी का एक चौथाई पानी बदल कर ताजा पानी भर दें जिससे पानी में ऑक्सीजन स्तर बढ़ जाता है।साथ ही साथ मत्स्य पालकों को ध्यान रखना चाहिए कि सर्दियों में मछलियां को आहार की मात्रा भी कम दें। इन बातों का ध्यान रखते हुए मत्स्य पालक सर्दी में भी अपने तालाब की मछलियों को अच्छी वृद्धि करा सकते हैं और रोगों से भी बचा सकते हैं ।

विश्व मत्स्य दिवस के बारे में बताते हुए डॉ0 शशिकांत ने बताया कि मत्स्य पालन क्षेत्र को एक उभरता हुआ क्षेत्र माना जाता है और इसमें समाज के कमजोर वर्ग के आर्थिक सशक्तिकरण समाज और समावेशी विकास लाने की अपार संभावनाएं है। भारत वैश्विक मछली उत्पादन में 8 प्रतिशत हिस्सेदारी के साथ विश्व का तीसरा सबसे बड़ा मछली उत्पादक , दूसरा सबसे बड़ा जलीय कृषि उत्पादक , सबसे बड़ा झींगा उत्पादक और चौथा सबसे बड़ा समुद्री खाद्य निर्यातक है । उन्होंने बताया कि भारतीय मत्स्य पालन क्षेत्र लगातार बढ़ रहा है और मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय के मत्स्य पालन विभाग का यह प्रयास रहा है न केवल 22 एमएमटी मछली उत्पादन के पीएमएमएसवाई लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रगति को बनाए रखा जाए , बल्कि वित्तीय वर्ष 2024 - 25 तक एक लाख करोड़ रुपए का निर्यात भी किया जा सके । यह क्षेत्र देश में तीन करोड़ मछुआरों और मछली पालकों को रूप से आय एवं आजीविका प्रदान करने मे मुख्य भूमिका निभा रहा है ।

Sign in to edit and save changes to this file.

कानपुर
20 नवम्बर, 2023 5

...यंस
...जेता

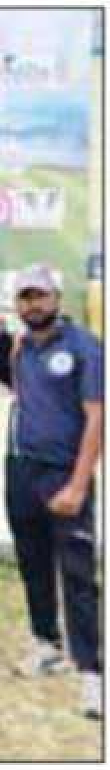

।

...नवां कर ... शानदार ...। जबाव ...की टीम ... खोकर ...की ओर ...जी कर ...ल्लेबाजों ...खेल के ... टीम ने ...जीत कर

सर्दियों में मत्स्य पालक तालाबों की देखभाल की आवश्यकता

❑ महीने में दो बार तालाब का एक–चौथाई पानी बदलें मत्स्य पालक

कानपुर, 19 नवम्बर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर के पशुपालन वैज्ञानिक डॉ. शशिकांत ने सर्दियों में मत्स्य पालक तालाबों की करें विशेष देखभाल विषय पर एडवाइजरी जारी की है उन्होंने विश्व मत्स्य दिवस 21 नवंबर से पूर्व मत्स्य पालकों के लिए एडवाइज जारी करते हुए बताया है कि वर्तमान समय सर्दी का है । मछली पालन के लिए यह समय बहुत ही कठोर होता है। इस समय मछलियों की नवंबर, दिसंबर , जनवरी के महीनों में वृद्धि कम हो जाती है साथ ही साथ मछलियां काफी सुस्त हो जाती हैं । तालाबों में ऑक्सीजन की कमी हो जाती है। जिससे मछलियों की मृत्यु दर बढ़ जाती है। इन सभी कारणों को ध्यान में रखते हुए मत्स्य पालकों को तालाबों में ऑक्सीजन की पर्याप्त व्यवस्था करने हेतु एरिएटर का प्रयोग करना चाहिए। यदि एरिएटर संभव न हो सके तब तालाब में प्रत्येक माह एक या दो बार पूरे तालाब के पानी का एक चौथाई पानी बदल कर ताजा पानी भर दें जिससे पानी में ऑक्सीजन स्तर बढ़ जाता है।साथ ही साथ मत्स्य पालकों को ध्यान रखना चाहिए कि सर्दियों में मछलियां को आहार की मात्रा भी कम दें। इन बातों का ध्यान रखते हुए मत्स्य पालक सर्दी में भी अपने तालाब की मछलियों को अच्छी वृद्धि करा सकते हैं और रोगों से भी बचा सकते हैं । विश्व मत्स्य दिवस के बारे में बताते हुए डॉ शशिकांत ने बताया कि मत्स्य पालन क्षेत्र को एक उभरता हुआ क्षेत्र माना जाता है और इसमें समाज के कमजोर वर्ग के आर्थिक सशक्तिकरण समाज और समावेशी विकास लाने की अपार संभावनाएं हैं। भारत वैश्विक मछली उत्पादन में 8 प्रतिशत हिस्सेदारी के साथ विश्व का तीसरा सबसे बड़ा मछली उत्पादक , दूसरा सबसे बड़ा जलीय कृषि उत्पादक, सबसे बड़ा झींगा उत्पादक और चौथा सबसे बड़ा समुद्री खाद्य निर्यातक है। उन्होंने बताया कि भारतीय मत्स्य पालन क्षेत्र लगातार बढ़ रहा है और मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय के मत्स्य पालन विभाग का यह प्रयास रहा है न केवल 22 एमएमटी मछली उत्पादन के पीएमएमएसवाई लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रगति को बनाए रखा जाए, बल्कि वित्तीय वर्ष 2024-25 तक एक लाख करोड़ रुपए का निर्यात भी किया जा सके। यह क्षेत्र देश में तीन करोड़ मछुआरों और मछली पालकों को रूप से आय एवं आजीविका प्रदान करने मे मुख्य भूमिका निभा रहा है।